शुष्क क्षेत्र में किसान के आर्थिक विकास का आधार : बेर

एम.एल. मीणा, धीरज सिंह, एम.के. चौधरी एवं पी.के. तोमर

भाकृअनुप–काजरी, कृषि विज्ञान केन्द्र, पाली–मारवाड़ 306401 (राजस्थान)

श्री ताजु खान ग्राम पादरली, तहसील पाली जिला पाली के एक मध्यम परिवार का उत्साहित कृषक है। परिवार पिछड़ा होने के कारण उच्च शिक्षा से वंचित रह गया और घर पर हो रही परम्परागत खेती के काम में जुट गया।

वर्ष 2008 के शुरुआत में इनकी मुलाकात कृषि विज्ञान केन्द्र, पाली के वैज्ञानिकों से हुई। वैज्ञानिकों के सुझाव व सलाह पर ताजु खान ने 2 हैक्टयर में बेर का बगीचा लगाने का फैसला किया। उन्होंने कृषि विज्ञान केन्द्र, पाली से बेर की वैज्ञानिक खेती पर प्रशिक्षण प्राप्त किया। कार्य के प्रति रुचि एवं उत्साह को देखते हुए राष्ट्रीय बागवानी मिसन की योजना के अन्तर्गत उद्यान विभाग ने 8 बीघा भूमि हेतु बेर की उन्नत किस्म ''गोला'' के पौधे मुफ्त उपलब्ध करवाये जिनको के.वि.के. काजरी के वैज्ञानिकों की देखरेख में जुलाई 2008 में लगवाया गया।

तत्पश्चात् वैज्ञानिकों द्वारा समय–समय पर भ्रमण के दौरान दिये गये सुझाव सलाह व मार्गदर्शन के साथ ताजु खान की रुचि, लगन व मेहनत की बदौलत बगीचा दिन–दूना–रात चौगुना फलता–फूलता चला गया। बगीचे में शुरु के तीन वर्षो तक अन्तराशस्य के रुप में परम्परागत खेती भी चलती रही व आमदनी भी निरन्तर होती रही। उससे परिवार का खर्चा चलता रहा।

चौथे वर्ष सन् 2012 में जनवरी से मार्च के दौरान फलोत्पादन शुरु हो गया तो ताजु खान की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। चौथे वर्ष 2012 में ताजु खान ने बेर के उत्पादन से पहली बार लगभग 50,000 रुपये का शुद्ध लाभ कमाया। जबकि बाद में सन् 2013 में 60,000 रुपये का बेर के बगीचे से शुद्ध लाभ कमाया। जबकि वह पहले परम्परागत खेती से इसी खेत से बड़ी मुशकिल से 5,000 रुपये का वार्षिक शुद्ध लाभ ले पाता था। फलों की गुणवत्ता को

देखते हुए गाँव में उदयपुर, अहमदाबाद व जोधपुर के व्यापारी ठेको लेने के लिए लालायित रहने लगे व ठेके की आधी कीमत का अग्रिम भूगतान करने लगे। ताजु खान ने अपने परिश्रम व दूरदर्शिता तथा वैज्ञानिक ढंग से बेर को पूर्ण व्यवसाय के रुप में अपनाकर बेर उत्पादन में नये आयाम स्थापित किये। वर्ष 2011 में अपने खेत के ढलान पर एक खेत तलाई (टांका) 100X80 फीट लम्बाई व चौड़ाई व 12 फीट गहरा का निर्माण कराया। इस टांके द्वारा बेर के पौधों व अन्तराशस्य फसलों में सिंचाई के रूप में उपयोग लिया। इसके साथ ही इसमें मछली पालन भी शुरू किया जो प्रथम वर्ष में शुद्ध 13,500 रूपये का लाभ हुआ। इस प्रकार ताजु खान ने वर्षा जल को संरक्षण कर उसका सही उपयोग किया। इसके लिए के.वि.के. द्वारा खेत तलाई का प्रशिक्षण प्राप्त किया और अपनी आय में वृद्धि की।

श्री ताजु खान के बगीचे की सफलता एवं समृद्धता को देखते हुए सन् 2012–13 में अन्य किसानों द्वारा भी लगभग 20 बीघा जमीन में बेर के बगीचे लगाये। ताजु खान के बगीचे की विशेषता यह है कि उन्होंने रासायनिक खादों के बदले बकरी की मैंगनी की खाद का प्रयोग किया, जिससे बेर के फलों में गुणवत्ता व उत्पादन में वृद्धि हुई साथ बैचने में जल्दी व अधिक किमत में बिके। वर्ष 2012 से प्रत्येक वर्ष प्रति पौधा 35 कि.ग्रा. मैंगनी की खाद दी जा रही है। बगीचे में कीट के प्रकोप से बचाव हेतु समय–समय पर के.वि.के. के वैज्ञानिकों से सलाह लेते हैं एवं कीट आक्रमण से मुक्ति प्राप्त करने के सार्थक प्रयास करते है।

ताजु खान फल उत्पादन समाप्त होने के पश्चात् 15 मई के आसपास बेर के पौधों में कटाई–छंटाई का कार्य प्रारम्भ कर देते हैं। ताजु खान साल में मात्र 1 से 2 सिंचाई ही देते हैं परन्तु अन्तिम सिंचाई 15 अक्टूबर के आसपास देना नहीं भूलते हैं।

दृढ़ इच्छा शक्ति के कारण ताजु खान ने वैज्ञानिको के सुझाव पर अपने बगीचे में बेर की नर्सरी का कार्य भी अप्रेल 2014 में शुरु कर दिया है, जिससे अच्छी गुणवत्ता के पौधे उचित मूल्य पर आस–पास के किसानों को समय पर उपलब्ध करवाते हैं। इस प्रकार ताजु खान ने अपने क्षेत्र में बेर की खेती का प्रसार करने का बीड़ा उठाकर फल उत्पादन को ऊँचाइयों पर पहुचाने का बिगुल बजा दिया है।

बेर के पौधे रोपण हेतु गड्ढा तैयार करना

खेत तलाई (टांका) निर्माण

के.वि.के. वैज्ञानिकों द्वारा अवलोकन

के.वि.के. वैज्ञानिकों द्वारा प्रषिक्षण

फलों से लदा पौधा